25 April

Date __/__/__

रूप से किसी अन्य नगर या औद्योगिक केन्द्र की ओर चले जाते है।

4. शोषणकारी ग्रामीण सामाजिक संरचना :— ग्रामीण कृषक संरचना का अध्ययन करने वाले अधिकांश विद्वानों का कहना है कि इसकी प्रकृति ही शोषणकारी रही है। भू-स्वामी एवं उच्च जातियों के लोग निम्न जातियों के लोगों का सदैव शोषण करते है ऐसे लोगों को गाँव में आर्थिक सुरक्षा भी अधिक प्राप्त नहीं होती है। समय मिलते ही अनेक ऐसे लोग शोषण के कुचक्र से बचने के लिए भी अन्य स्थानों की ओर प्रवर्जन करते है।

5. औद्योगिक केन्द्रों का विकास :— भारत में औद्योगिक केन्द्रों का विकास तेजी से हुआ है। अधिकांश उद्योग उन क्षेत्रों में ही खोले गए है जहाँ आवागमन एवं संचार के साधन तो उपलब्ध है ही साथ ही कच्चा माल, बिजली, पानी भी सरलता से उपलब्ध होता है। ऐसे उद्योग भी आस-पास तथा दूर दराज के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते है तथा वे इन कारखानों में काम करने हेतु अपने पैतृक गाँव से प्रवर्जन कर जाते है

6. नगरों में रोजगार के अधिक अवसर :— प्रशासनिक एवं बाजारों की विकास की दृष्टि से नगरों में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते है। साथ ही नगरों में अधिक औद्योगिक विकास भी तीव्रता से होता है यह सब अवसर अनेक ग्रामीण लोगों को नगरों की ओर प्रवर्जन के लिए विवश कर देते है। पंजाब एवं पश्चिम - उत्तर प्रदेश में अनेक नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों में अधिकांश प्रवासी मजदूर बिहार के रहने वाले है।

7. असमान एवं अनियोजित विकास :— भारत में नगरों उद्योगों एवं कृषि का विकास

Page No.

Scanned with CamScan

योजनाबद्ध रूप में नहीं हुआ है। भारत में अनेक राज्य ऐसे है जहाँ पर अन्य राज्यों की तुलना में औद्योगिक एवं कृषि विकास अधिक हुआ है। औद्योगिक एवं कृषि की दृष्टि से पिछड़े राज्यों के अनेक लोग ऐसे राज्यों की ओर प्रवर्जन कर जाते है। जिनमें विकास अधिक हुआ है। तथा इस नाते रोजगार के अवसर भी अधिक होते है।

उद्योग में कृषि की दृष्टि से विकसित दोनों एवं राज्यों जैसे :- पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश एवं पश्चिम बंगाल आदि में उद्योगों एवं खेतों में काम करने वाले अधिकांश प्रवासी मजदूर बिहार एवं पूर्वी-उत्तरप्रदेश से प्रवर्जन करके आये है। इन प्रवासी मजदूरों को इन दोनों एवं राज्यों में रोजगार तो मिला ही हुआ है, वे वहाँ रहते हुए आर्थिक दृष्टि से भी अधिक सुरक्षित महसूस करते है।

Date
16/03/19

गाँव से गाँव की ओर प्रवर्जन
(Rural to Rural Migration)

गाँव से गाँव की ओर प्रवर्जन गतिशीलता से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि प्रवासियों की गतिशीलता उदग्र एवं क्षैतिज दोनों रूप में ही हो सकती है। भारत दक्षिण एशिया तथा अफ्रीका के देशों में इस प्रकार का प्रवर्जन अधिक पाया जाता है ऐसे प्रवर्जन को प्रोत्साहन देने वाले प्रमुख कारण निम्नलिखित है :-

1. गाँव से गाँव की ओर प्रवर्जन करने वाले अधिकांश व्यक्ति ऐसे होते है जिनके पास आजीविका के प्रर्याप्त साधन नहीं होते है।

2. सूखा, अकाल, फसल का न होना आदि अनेक प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी ग्रामवासियों को इस प्रकार के प्रवर्जन के लिए विवश कर देती है।

3. काम के बदले में मिलने वाली मजदूरी इस प्रवर्जन का प्रमुख कारण मानी जाती है अनेक बिहारी, श्रमिक, पंजाब, पश्चिम उत्तर प्रदेश एवं अनेक राज्यों ने इसीलिए प्रवर्जन करते है क्योंकि

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

वहाँ श्रम के बदले में उन्हें अधिक पैसे मिलते है।

4. आस-पास के अन्य किसी गाँव में रोजगार के अधिक एवं अच्छे अवसर भी इस प्रकार की प्रवर्जन के लिए उत्तरदायि है।

5. इस प्रकार के प्रवर्जन में कृषि तकनीकी की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि जिन गाँवों में उन्नत तकनीकी उपलब्ध होती है वहाँ रहने वाले लोग अधिक खुशहाल होते है। इनकी यह खुशहाली दूर-दराज के निर्धन ग्रामवासियों को उन गाँवों की ओर आकर्षित करती है।

6. गाँव से गाँव की ओर प्रवर्जन पर हुए अध्ययनों से एक अन्य तथ्य यह सामने आया है कि प्रवर्जन के परिणाम स्वरूप में होने वाली गतिशीलता केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं होती, परन्तु सम्पूर्ण परिवार ही इससे प्रभावित होता है।

गाँव से नगर की ओर प्रवर्जन

(Rural to urban migration)

गाँव से नगर की ओर प्रवर्जन की मात्रा गाँव से गाँव की ओर प्रवर्जन से कई अधिक है। इस प्रकार के प्रवर्जन में गाँव में रहने वाले व्यक्ति नगरों की ओर प्रवर्जन करते है इस प्रकार के प्रवर्जन के प्रमुख कारण निम्नलिखित है :—

1. औद्योगिक विकास के कारण नगरों में श्रमिकों की अधिक आवश्यकता होती है इसीलिए प्रवर्जन में गाँव में रहने वाले व्यक्ति नगरों की ओर प्रवर्जन करते है इस प्रकार के प्रवर्जन में अधिकांश श्रमिक आस-पास के गाँवों से ही आते है।

2. नगरों में सरकारी एवं गैर सरकारी दफ्तर भी अधिक होते है। बहुत से ग्रामवासी अपने बच्चों की शिक्षा हेतु पूरे परिवार सहित नगरों की ओर प्रवर्जन करते है।

3. बहुत से ग्रामवासी नौकरी की तलाश में नगरों की ओर ही प्रवर्जन करते है।

4. विस्तृत बाजार होने के कारण भी नगरों में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते है।

5. व्यवसायों की अधिकता भी इस प्रकार के प्रवर्जन एवं गतिशीलता को प्रोत्साहन देती है।

Page No. ____

Date ___/___/______

6. नगरों में अधिक मजदूरी मिलती है नगरों में अधिकांश रिक्शा चालक अधिक मजदूरी के कारण ही काफी दूर के गाँव एवं राज्यों से प्रवर्जन करते हैं।

7. गाँव में होने वाले आर्थिक संकट, प्राकृतिक विपदाएँ बढ़ती हुए बेरोजगारी एवं निर्धनता जैसे कारण भी इस प्रकार के प्रवर्जन को प्रोत्साहन देती है।

8. नगरों में अप्रशिक्षित श्रमिकों की अधिक कमी होती है कमी गाँव से नगर की ओर प्रवर्जन करने वाले लोगों द्वारा ही पूरी की जाती है। अगर किसी गाँव के एक श्रमिक को काम मिल जाती है तो वह अपने अनेक अन्य परिचितों को भी नगर में आने के लिए प्रेरित करता है।

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन की समस्याएँ एवं उनका समाधान :-

(Problem's of Rural migration and their solution in India)

भारत में ग्रामीण प्रवर्जन अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है इसे प्रवर्जन करने वालों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रवर्जन करने वाले प्रवासियों की प्रमुख समस्याएँ एवं उनके समाधान हेतु सुझाव निम्नलिखित है :-

1. अशिक्षा की समस्या :- अधिकांश प्रवासी स्वंय तो अशिक्षित होती है पर वे अपनी बच्चों की शिक्षा की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देते है। कम उम्र में ही इन्हे बाल श्रमिकों के रूप में छोटे-मोटे रोजगारों में लगा देते है ताकि वे परिवार को चलाने में अपना योगदान प्रदान कर सके। इस प्रकार प्रवासी मजदूरों में अशिक्षा की समस्या पीढ़ी दर पीढ़ी बनी रहती है इस समस्या के समाधान हेतु प्रवासियों को बच्चों की शिक्षा की उपयोगिता के बारे में जागरूक बनाया जाना चाहिए। सरकारी स्कूलों में उन्हे नि:शुल्क शिक्षा सुविधाएँ उपलब्ध कराया जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(9)

Date __/__/__

२. आवास की समस्या :— प्रवासियों को छोटा-मोटा रोजगार तो मिल ही जाता है परन्तु वे अपने सीमित साधनों के कारण आवास की उचित व्यवस्था नहीं कर पाते हैं। जो प्रवासी बड़े नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों की ओर प्रवर्जन करते हैं। वे आसमान को छूने वाले मकानों के किराये देने में पूरी तरह से असमर्थ होते हैं। ऐसे स्थिति में उनके सामने झुग्गी-झोपड़ी में रहने के अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं होता है। इस समस्या के समाधान हेतु प्रत्येक नगर एवं औद्योगिक केन्द्र में कम कीमत के मकानों का निर्माण किया जाना चाहिए। इन मकानों को आसान किस्तों पर प्रवासियों विशेष रूप से प्रवासी मजदूरों को आवंटित करने में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

Date 18/03/17

३. कुपोषण की समस्या :— आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अधिकतर प्रवासियों का आहार भी पौष्टिक नहीं होता है। अनेक बार तो अल्पआहार द्वारा ही उन्हें अपना गुजारा करना पड़ता है। कुपोषण की समस्या के कारण प्रवासी मजदूरों में बच्चे के जन्म के समय माँ एवं बच्चे दोनों की मृत्यु दर अधिक होती है। इस समस्या के समाधान हेतु प्रवासी मजदूरों को कुपोषण के खतरों के प्रति सचेत किया जाना आवश्यक है। उन्हें सरकारी दरों पर न्यूनतम मूल्यों पर अनिवार्य वस्तुएँ उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

५. शोषण की समस्या :— अशिक्षित, अज्ञानी एवं पिछड़े होने के कारण नगरों के चतुर उद्योगपति एवं गाँव के धनी कृषक प्रवासियों का हर तरह से शोषण करते हैं। उन्हें अधिक घंटों के लिए काम करना पड़ता है तथा बदले में उन्हें सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी प्राप्त नहीं हो पाता है। अनेक बार तो वे पूरी तरह अपने मालिकों के रहमों पर निर्भर रहते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार को न्यूनतम मजदूरी अधिनियम को सख्ती से लागू करना चाहिए। ताकि मालिक प्रवासी

Page No.

Date ___/___/___

मजदूरों का शोषण न कर सके।

5. यौवन शोषण की समस्या :— स्त्री प्रवासियों का यौवन-शोषण भी एक समान्य बात है प्रवर्जन का अध्ययन करने वाले अनेक विद्वानों ने ईंट भट्ठों एवं घरेलू नौकरी करने वाली स्त्रियों के साथ होने वाले यौवन शोषण की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है कई बार तो यह आर्थिक यौवन शोषण आर्थिक प्रलोभन के कारण होता है। तो अनेक बार अपने मालिकों का जबरजस्ती का शिकार बन जाती है यह एक बहुआयामी समस्या है। इसका समाधान स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियोंमें सुधार लाकर ही किया जासकताहै।

6. नशा-वृत्ति की समस्या :— ऐसा देखा गया है कि अधिकांश प्रवासी लम्बी अवधि तक कठिन परिश्रम करते हैं उन्हें बिड़ी पीनें, तम्बाकु खाने, एवं चर्स एवं गाजें का प्रयोग करने तथा देशी शराब पीने की लत पड़ जाती है। अशिक्षित एवं अज्ञानी होने के नाते वे सोचते हैं कि इनका प्रयोग उनकी थकावट को कम करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि इनके सेवन का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वे कम आयु में ही अनेक प्रकार की बीमारियों का शिकार बन हो जाते है। इस समस्या के समाधान हेतु प्रवासी मजदूरों को नशे से होने वाले नुकशान के बारे में शिक्षित किये जाने की आवश्यकता है। उन्हें यह समझाया जाना चाहिए कि नशा वृत्ति पर पैसे खर्च करने के बजाय उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

7. गंदी बस्तियों का विकास :— नगरों एवं औद्योगिक केन्द्रों में विकसित होने वाली अधिकांश गन्दी बस्तियो का विकास प्रवासियों ने ही

Page No.

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

किया है। प्रवासी मजदूर काम-काज करने वाले स्थल के आस-पास खाली पड़ी सरकारी जमीन पर झुग्गी-झोपड़ी बनाकर रहने लगते है। इन गन्दी बस्तियों का वातावरण भी दूषित होता है। इनमें में रहने के कारण प्रवासी मजदूर, उनकी पत्नियाँ एवं बच्चे अनेक गलत काम करना सीख जाते है। सरकारी आवास एवं विकास परिषदों को चाहिए कि वे सस्ते आवास की समुचित व्यवस्था करें ताकि इनका लाभ प्रवासी मजदूरों को भी मिल सके। अगर सम्भव हो तो मकानों के आवंटन के समय प्रवासी मजदूरों का कोटा तय कर देना चाहिए।

8. <u>स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव</u> :- गाँव से नगर की ओर प्रवर्जन करने वाले ग्रामवासी नगरीय एवं औद्योगिक पर्यावरण के साथ सरलता से समांजस्य स्थापित नही कर पाते है उनके गाँव एवं नगर या औद्योगिक केन्द्र के वातावरण में जमीन आसमान का अन्तर है। नमे वातावरण का उनके सेहत पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। वे ऐसी जलवायु में रहने के लिए विवश हो जाते है जिनकी उन्हे आदत नहीं होती है। शहरों में उन्हे खुली हवा भी नहीं मिल पाती है तथा उनके खाने-पीने में भी काफी अन्तर हो जाता है। उन्हे नगरों की गन्दी, गलियों, बस्तियों में रहना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विवाहित हो जाने पर अनेक कुरीतियों का भी शिकार हो जाती है, श्रम के रॉयल कमीशन के अनुसार "नगरीय जीवन अपने साथ अनेक आकर्षण देकर आता है जो थके हुए शरीरों को अल्कोहल खतरनाक आराम देता है और जुआ भी उन लोगों को आकर्षित कर लेता है। जो इसे पहले अपने गाँव में केवल स्वास्थ्य वर्द्धक कामों में लगे रहते थे। इसे श्रमिकों का स्वास्थ्य भी खराब नहीं होता उनकी कार्य-क्षमता भी कम होने लगती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारत